रॉबर्ट वानॉय , ओल्ड टेस्टामेंट हिस्ट्री, लेक्चर 15

द फ्लड नैरेटिव (जनरल 6-9)

ई. बाढ़ की कहानी

1. बाढ़ की सीमा 2. बाढ़ की अवधि

हम उत्पत्ति 6-9, बाढ़ की कहानी पर अपनी चर्चा शुरू करते हैं, और हमने ई. के अंतर्गत 1 पर चर्चा की थी, जो है, "बाढ़ की सीमा।" 2. वह जगह है जहां हम उठाते हैं, जो है, "बाढ़ की अवधि," और वहां बस एक बहुत ही संक्षिप्त टिप्पणी है। आपने अध्याय 7, श्लोक 11 में पढ़ा, "नूह के जीवन के छह सौवें वर्ष में, दूसरे महीने में, महीने के सत्रहवें दिन, उसी दिन गहरे पानी के सोते टूट गए, और स्वर्ग की खिड़कियाँ टूट गईं। खुल गया।" तो यह नूह के छह सौवें वर्ष के दूसरे महीने का सत्रहवाँ दिन है। उत्पत्ति 8:14 में तुम पढ़ते हो, कि दूसरे महीने के सातवें बीसवें दिन को पृथ्वी सूख गई। इसलिए अगले वर्ष के दूसरे महीने के 27 वें दिन, पृथ्वी इतनी सूख गई कि फिर से बसा जा सके। तो आपके पास एक साल प्लस 10 दिन हैं। अब इस पर इतनी चर्चा हो चुकी है कि मैं विस्तार में नहीं जाऊंगा। जैसे प्रश्न, क्या लेखक सौर वर्ष या चंद्र वर्ष की बात कर रहा था? यदि आप दिनों की सटीक संख्या जानना चाहते हैं, तो निस्संदेह, हम सौर वर्ष प्रणाली के आदी हैं। अधिकांश प्राचीन संस्कृतियाँ चंद्र वर्ष पर चलती थीं। इससे कुल दिनों की संख्या में कुछ अंतर आएगा। लेकिन किसी भी स्थिति में, यह लगभग एक वर्ष है। एक वर्ष से दस दिन अधिक। तो फिर, जैसा कि हमने पिछली कक्षा में चर्चा की थी, हालाँकि, यह सामान्य वार्षिक बाढ़ नहीं थी। यह कुछ ऐसा परिमाण था जो अद्वितीय था।

3. बाढ़ का कारण

3. आपकी शीट पर है, "बाढ़ का कारण।" मैं इस कारण पर चर्चा करने में थोड़ा समय बिताना चाहता हूं। मुझे लगता है कि आप इसे अध्याय 6, श्लोक 5 से 8 में निर्दिष्ट पाते हैं, जहां आप पढ़ते हैं कि "भगवान ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता बहुत बढ़ गई है और उसके दिल के विचारों की हर कल्पना लगातार बुराई ही थी। और यहोवा को इस बात से पछतावा हुआ कि उस ने मनुष्य को पृथ्वी पर बनाया, और उसके मन में उदासी हुई, और यहोवा ने कहा, 'मैं मनुष्य को, जिसे

मैं ने पृथ्वी पर से उत्पन्न किया है, नाश करूंगा; अर्यात् मनुष्य, और पशु, और रेंगनेवाले जन्तुओं, और पक्षियों , दोनों को हवा की, क्योंकि इससे मुझे पश्चाताप होता है कि मैंने उन्हें बनाया है।" अब, यह मनुष्य की दुष्टता के बारे में एक बहुत मजबूत बयान है जो भगवान के न्याय का कारण है। यदि आप उत्पत्ति 6:5 की कविता पर विचार करते हैं, तो मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि किस तरह से अतिशयोक्ति का ढेर लगा हुआ है, आप शायद कह सकते हैं। बुराई की तीव्रता बहुत अधिक थी. मनुष्य की दुष्टता महान थी. बुराई की तीव्रता बुराई की आंतरिकता के साथ बहुत अधिक थी। उसके हृदय के विचार की प्रत्येक कल्पना बुरी थी। बुराई की समावेशिता: यह उसके दिल की *हर कल्पना है।* बुराई की विशिष्टता: वह *केवल* बुराई थी। और फिर बुराई की निरंतरता: पूरे दिन। किंग जेम्स कहते हैं "लगातार।" शाब्दिक रूप से हिब्रू में यह "सारा दिन" था। तो आप इसकी तीव्रता, इसकी आंतरिकता, इसकी समग्रता, विशिष्टता और निरंतरता को देखते हैं। यदि आप 6:12 में देखें, तो आपको बुराई पर एक और टिप्पणी मिलेगी। यदि आप 6:12 पर कुछ छंदों को देखते हैं, "परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और क्या देखा कि वह भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि सभी प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया है।" और फिर 8:21 कहता है, "मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को शाप नहीं दूंगा, क्योंकि मनुष्य के मन की कल्पना बचपन से ही बुरी होती है।" दूसरे शब्दों में, बुराई जन्मजात होती है; यह सीखा हुआ नहीं है. पतन के बाद कुछ ऐसा जो मनुष्य के रूप में मनुष्य की विशेषता है। उसका पापी स्वभाव है. वह बचपन से ही दुष्ट है। इसलिए जब हम बाढ़ के कारण के बारे में बात करते हैं, तो यह मनुष्य की दुष्टता है। भगवान ने इसे इस बिंदु तक अनियंत्रित रूप से जाने दिया था और फिर बाढ़ के रूप में निर्णय आता है।

4. परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य की पुत्रियाँ - उत्पत्ति 6:1-4

अब, उत्पत्ति का अध्याय 6 और वे श्लोक, विशेष रूप से श्लोक 5, लेकिन श्लोक 5 से 7, जो बाढ़ के कारण की बात करते हैं, एक ऐसे अंश से पहले हैं जिसने व्याख्या के संबंध में बहुत चर्चा की है। यह वही है जिसके बारे में आपने वोस में पढ़ा था, जहां भगवान के पुत्रों का पुरुषों की बेटियों के साथ विवाह होता है। 6:1-4. मुझे लगता है कि उत्पत्ति 6:1-4 में आपके पास जो कुछ है वह उस प्रकार की दुष्टता का एक उदाहरण या उदाहरण है जिसके बारे में प्रभु तब बात कर रहे हैं जब आप

पद 5 पर आते हैं। अब आइए 6:1-4 पढ़ें। “जब मनुष्य पृथ्वी पर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुईं, तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं, और उन्होंने उन सभों से जिन्हें उन्होंने चाहा, ब्याह लिया, और प्रभु ने कहा, 'मेरी आत्मा मनुष्य से सर्वदा संघर्ष न करेगी, क्योंकि वह भी देह है, और उसकी आयु 120 वर्ष की होगी। ' और उन दिनों पृथ्वी पर दानव रहते थे। और इस प्रकार जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास आए, और उनके द्वारा बच्चे उत्पन्न हुए, तो वे पराक्रमी पुरुष बन गए, और वे प्राचीनों में से प्रसिद्ध हो गए। अब, निःसंदेह, प्रश्न यह है कि यहाँ क्या वर्णित किया जा रहा है? परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्य की पुत्रियों के बीच इस रिश्ते में क्या दुष्टता या पाप शामिल था?

एक। पौराणिक दृष्टिकोण अनेक दृष्टिकोण विकसित किये गये हैं। पहला पौराणिक विचार है, जो आलोचनात्मक विद्वानों की विशेषता है जो मानते हैं कि विशेष रूप से उत्पत्ति की पुस्तक में बहुत सारी पौराणिक पौराणिक सामग्री है जो केवल अतिरिक्त-बाइबिल सामग्री से शामिल की गई है। विचार यह है कि दिव्य प्राणी सांसारिक महिलाओं की सुंदरता से मोहित हो गए, उनके साथ विवाह में प्रवेश किया, और फिर पुरातनता के विशाल नायकों, महान शक्ति और शक्ति के लोगों की एक जाति को जन्म दिया। विचार यह है कि यह कुछ ऐसा नहीं है जो वास्तव में घटित हुआ हो, यह केवल एक पौराणिक प्रकार की कहानी है। मुझे लगता है कि पुराने नियम के बारे में हमारा दृष्टिकोण जो हो रहा है उसकी संभावित समझ के रूप में इसे शामिल नहीं करता है।

बी। देवदूतों का दृश्य

दूसरा दृष्टिकोण बहुत अधिक सामान्य है, विशेष रूप से प्रारंभिक चर्च में आम है, और आज इसे पूरी तरह से खारिज नहीं किया गया है और यह विचार है कि भगवान के पुत्र स्वर्गदूतों, आध्यात्मिक प्राणियों का संदर्भ हैं, और उन्होंने महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाए। इस संघ की संतान शक्तिशाली पुरुष, नेफालिम थे जिनका वर्णन श्लोक 4 में किया गया है। अब, मैं आश्वस्त नहीं हूं कि यह सबसे अच्छा दृष्टिकोण है, और मुझे ऐसा लगता है कि कुछ आपत्तियां हैं जो काफी गंभीर हैं। पहला, श्लोक 3 में, सज़ा मनुष्यों के लिए है, स्वर्गदूतों के लिए नहीं। दूसरे शब्दों में, यदि

देवदूत ही अपनी उचित स्थिति का उल्लंघन करने वाले थे और महिलाओं के साथ इस संबंध में आए, तो आप उम्मीद करेंगे कि निर्णय पुरुषों पर नहीं, बल्कि स्वर्गदूतों पर होगा। जबकि आप श्लोक 3 में पढ़ते हैं, प्रभु कहते हैं, "मेरी आत्मा हमेशा मनुष्य के साथ संघर्ष नहीं करेगी, और उसके दिन गिने जाते हैं, जलप्रलय से पहले केवल 120 वर्ष ही बचे हैं ," और *उन पर निर्णय आता है*। दूसरे, यहां स्वर्गदूतों का उल्लेख न तो तत्काल या व्यापक संदर्भ में किया गया है। आपको आश्चर्य होता है कि यदि यही इरादा है तो आप अचानक स्वर्गदूतों का यह संदर्भ कैसे लेंगे। तीसरा, और मैं इसे विलियम हेनरी ग्रीन से लेता हूं। विलियम हेनरी ग्रीन बीसवीं सदी की शुरुआत में प्रिंसटन सेमिनरी में ओल्ड टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे। मुझे लगता है कि मैंने पहले उसका उल्लेख किया था। वह वही व्यक्ति थे जिन्होंने वेलहाउज़ेन के साथ उन दिनों में बातचीत की थी जब वेलहाउज़ेन के सिद्धांतों को पहली बार गहन माना गया था और उनका पालन किया जा रहा था। और वह एक उत्कृष्ट विद्वान हैं. लेकिन वह कहते हैं, "स्वर्गदूतों के यौन संबंधों में प्रवेश करने में सक्षम होने की अवधारणा हिब्रू विचार के लिए पूरी तरह से विदेशी है" और उन्हें लगता है कि पवित्रशास्त्र में यह सत्यापित करने का कोई आधार नहीं है कि यह कुछ ऐसा है जिसे संभव के रूप में भी देखा जा सकता है। फिर उसने यीशु के कथन पर ध्यान दिया कि स्वर्ग में हम स्वर्गदूतों की तरह हैं, न तो शादी कर रहे हैं और न ही शादी में दिए जा रहे हैं। पवित्रशास्त्र जो कहता है उससे देवदूत यौन प्राणी नहीं लगते। इसलिए मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। जिन लोगों ने इस दृष्टिकोण को अपनाया है, वे आम तौर पर यहूदा से अपील करते हैं, पद 6, और आप वहां पढ़ते हैं, यहूदा 6 में, "स्वर्गदूतों ने अपनी पहली संपत्ति नहीं रखी, लेकिन अपना निवास स्थान छोड़ दिया, उन्होंने निर्णय होने तक अंधकार के नीचे अनंत जंजीरों में रखा है महान दिन।" विचार यह है कि जूड 6 इस मार्ग से जुड़ा हुआ है और जूड 6 में स्वर्गदूतों द्वारा अपना निवास स्थान छोड़ने का संदर्भ इस संबंध में प्रवेश करने के लिए स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आने के लिए है। मैं यहूदा 6 के संदर्भ के संबंध में इतना निश्चित नहीं हूं कि उनकी पहली संपत्ति और उनके स्वयं के निवास स्थान को छोड़ने को कुछ स्थानिक के रूप में समझा जाएगा। मुझे लगता है कि यह अधिक विचार है कि यह उनके संचालन का क्षेत्र है जो भगवान ने उन्हें दिया था। मुझे यकीन नहीं है कि इसे स्थानिक रूप में समझा जाना चाहिए, लेकिन संचालन की शक्ति का

क्षेत्र उन्हें सौंपा गया था, और जब शैतान ने विद्रोह किया और अन्य लोग उसके साथ चले गए, तो उन्होंने उससे बाहर और आगे कदम बढ़ाने का फैसला किया। इसलिए मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यहूदा 6 का अनुच्छेद वास्तव में इस अनुच्छेद से संबंधित है, लेकिन आमतौर पर यही वह पाठ है जिसकी अपील इस देवदूत दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए की जाती है।

सी। सेथाइट दृश्य _

एक तीसरा दृष्टिकोण, जो संभवतः आज आपके सामने आने वाला सबसे आम दृष्टिकोण है, वह है जिसकी वकालत वोस ने की थी, और अन्य ने भी की थी, और वह यह है कि ईश्वर के पुत्र और पुरुषों की बेटियाँ सेथाइट और कैनाइट वंश के बराबर हैं । . और उन दो पंक्तियों की तुलना उत्पत्ति में इससे पहले की गई है। हमने अपनी आखिरी कक्षा के समय में उस पर गौर किया। कैनिट वंश की विशेषता अधर्मिता और दुष्टता है; सेथाइट वंश, ईश्वरीय भक्ति के द्वारा । तो फिर, पाप ईश्वरीय और अधर्मी के बीच मिश्रित विवाह है। तो विचार यह है कि सेथाइट वंश इस ईश्वरीय वंश के रूप में अपनी पहचान बनाए रखने में सक्षम नहीं है, नूह के घर को छोड़कर, अपवाद था, लेकिन आम तौर पर यह अधर्मी लोगों के साथ बह गया है। दिलचस्प बात यह है कि, जैसे ही दोनों पंक्तियाँ मिश्रित होती हैं, पहल ईश्वर से डरने वाली पंक्ति से आती है, क्योंकि यह ईश्वर के पुत्र हैं, सेठाइट रेखा , जो कहती है, "जब उन्होंने पुरुषों की बेटियों को देखा, तो वे निष्पक्ष थीं [वह कैनाइट वंश है] उन्होंने जिसे भी चुना, उसकी पत्नियाँ ले लीं।" तो पहल ईश्वर-भयभीत लाइन से आती है, क्योंकि वे कैनाइट महिला के आकर्षण को देखते हैं।

अब, मुझे लगता है कि इस दृष्टिकोण में भी कुछ समस्याएं हैं। मुझे लगता है कि प्रमुख प्रारंभिक समस्या यह है कि यह आपमें से उन लोगों के लिए हिब्रू शब्द को बाध्य करता है, जिनके पास हिब्रू भाषा है, *हादम*, जो पुरुषों/मानव जाति के लिए शब्द है। यह *हदाम*, या पुरुषों को श्लोक 1 और श्लोक 2 में दो अलग-अलग अर्थों में समझने के लिए मजबूर करता है। देखिए, आपने श्लोक 1 में पढ़ा, "यह तब हुआ जब मनुष्य, *हदाम*, पृथ्वी पर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुईं। खैर, यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि वहां पुरुष, सामान्य रूप से मानव जाति को संदर्भित करते हैं, जैसे ही मनुष्य ने गुणा करना शुरू किया। जब आप पद 2 पर आते हैं, तो आप पढ़ते हैं,

"परमेश्वर के पुत्रों ने *हदाम* की बेटियों , अर्थात् मनुष्यों की बेटियों को देखा।" और वहां, आप इस दृष्टिकोण के तहत यह कहने के लिए मजबूर हैं कि *हादम* का मतलब विशेष रूप से कैनाइट लाइन है। मानव जाति के भीतर सिर्फ एक वर्ग। इसका मतलब है कि आपको *हादम को* दो अलग-अलग अर्थों में, दो आगामी छंदों में लेना होगा। मुझे लगता है कि आप वास्तव में सवाल कर सकते हैं कि क्या बयानों के प्रवाह में ऐसा करने का कोई औचित्य है। ऐसा अधिक लगता है कि जो कहा जा रहा है वह यह है, "ऐसा हुआ जब मनुष्य बहुगुणित होने लगे, सामान्यतः मनुष्य, कि परमेश्वर के पुत्रों ने आम तौर पर मनुष्यों की पुत्रियों को देखा। वे निष्पक्ष थे और उन्होंने जिसे भी चुना, उसकी पत्नियाँ ले आये।" ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों श्लोकों की पुत्रियाँ एक जैसी हैं। आदमी वही हैं. आप देखते हैं कि आपकी बेटियां हैं जिनका उल्लेख 6:1 में किया गया है, "ऐसा हुआ कि जब मनुष्य पृथ्वी पर बहुत बढ़ने लगे, तो उनके बेटियां उत्पन्न हुईं।" पुरुष बहुगुणित हुए, उनकी बेटियाँ पैदा हुईं। "परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा।" क्या ये वही बेटियाँ नहीं हैं? तो मुझे लगता है कि इस दृष्टिकोण से यह एक समस्या है।

दूसरा प्रश्न जो इस व्याख्या के साथ उठाया जा सकता है वह यह है कि इन विवाहों से संतानें क्यों होनी चाहिए, जो कि एक ईश्वरीय और अधर्मी वंश के बीच एक मिश्रित विवाह है, संतानें नेफालिम *और* गिबोरिम *क्यों होनी चाहिए*। वे पद 4 में दिग्गजों के लिए हिब्रू का लिप्यंतरण हैं। वहां दिग्गज थे, यह हिब्रू में *नेफालिम है।* और फिर पद का अंतिम भाग, "उनसे बच्चे उत्पन्न हुए; वही शक्तिशाली पुरुष बन गए," वह *गिबोरिम* है, जो दोनों प्रसिद्ध व्यक्ति थे, या नाम के व्यक्ति थे, अधिक शाब्दिक रूप से "नाम के पुरुष।" मिश्रित विवाह से होने वाली संतानें इस प्रकार के व्यक्ति क्यों होनी चाहिए? जब हम अपने चौथे दृष्टिकोण को देखेंगे तो मैं इन शर्तों पर अधिक विस्तार से चर्चा करने के लिए वापस आऊंगा। और वह दिव्य राजत्व दृष्टिकोण है।

डी। राजत्व दृश्य

वहां दो लेख हैं जो आपकी ग्रंथ सूची पर भी हैं। आपकी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 10 पर, लगभग दो-तिहाई नीचे, हमारे पास *वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल जर्नल में क्लाइन का लेख* है: "उत्पत्ति 6:1-4 में दिव्य राजत्व" और लेरॉय बर्नी, "उत्पत्ति 6 का एक व्याख्यात्मक अध्ययन: 1970 में *द जर्नल ऑफ़ द*

इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी में 1-4"। इस दृष्टिकोण की मूल थीसिस यह है कि ईश्वर के पुत्रों का बेहतर अनुवाद "देवताओं के पुत्र" है। *एलोहीम* बहुवचन है, इसका अनुवाद एकवचन या बहुवचन में किया जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे इज़राइल के ईश्वर या हिब्रू देवताओं के संदर्भ के रूप में लेते हैं या नहीं। इसका बेहतर अनुवाद "देवताओं के पुत्र" के रूप में किया गया है और इसकी व्याख्या दैवीय राजत्व के प्राचीन निकट पूर्वी विचार के संबंध में की गई है। तो यहाँ जो संदर्भित किया जाएगा वह बाढ़-पूर्व राजाओं का है। देवताओं के पुत्र मनुष्य थे जो राजा थे, लेकिन उन्हें यहाँ देवताओं के पुत्रों के रूप में नामित किया गया है। पुरुषों की बेटियाँ सामान्यतः पुरुषों की बेटियाँ ही होंगी और बहुविवाह पाप है।

अब आइए इसे मूल थीसिस के रूप में देखें। बर्नी के लेख, पृष्ठ 47 में, उन्होंने राजाओं को विभिन्न देवताओं के पुत्रों के रूप में संदर्भित करने की व्यापक प्रथा पर चर्चा की है। और उसने कहा कि मिस्र में राजा को सूर्य देवता रे का पुत्र कहा जाता था। सुमेरो - अकाडियन राजा को देवी की संतान और देवताओं में से एक माना जाता था, और राजा को कड़ाई से देवताओं का पुत्र कहा जाता था। हित्ती राजा को मौसम देवता का पुत्र कहा जाता था। उनकी माँ का शीर्षक "भगवान की माँ" था। उत्तर पश्चिमी सामी भाषा में आम तौर पर, राजा को सीधे तौर पर "भगवान का पुत्र" कहा जाता था। देवता को राजा का पिता कहा जाता था। पाठ में देवताओं को राजा के पिता के रूप में संदर्भित किया गया है और कहा गया है कि राजा बाल का पुत्र या भगवान का पुत्र है। इस प्रकार, सेमेटिक उपयोग के आधार पर, आमतौर पर प्राचीन निकट पूर्वी रीति-रिवाजों के साक्ष्य के आधार पर, *बेने हैलोहिम शब्द*, भगवान के पुत्र, या देवताओं के पुत्र, संभवतः वंशवादी शासकों को संदर्भित करता है। पुरुषों की बेटियाँ सामान्यतः बेटियाँ ही होंगी। बहुविवाह पाप था।

आप पद 2 में ध्यान दें, “ परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्य की पुत्रियाँ सुन्दर थीं। उन्होंने उन सभी की पत्नियाँ ले लीं जिन्हें उन्होंने चुना था।” उन्होंने उन *सभों की पत्नियाँ ले लीं* जिन्हें उन्होंने चुना था। और सवाल यह है कि आप "का" पूर्वसर्ग को कैसे समझते हैं? हिब्रू में, पूर्वसर्ग, आपमें से जिनके पास हिब्रू है, *मिन है*। "उन्होंने उन सभी *की पत्नियाँ ली* जिन्हें उन्होंने चुना," *मिनट*, जिसका अनुवाद यहाँ "की" किया गया है। अब, सामान्य व्याख्या यह है कि उस *न्यूनतम*, या "का" को आंशिक माना जाए। दूसरे शब्दों में, आध्यात्मिक स्थिति या उस प्रकार की किसी भी चीज़ की

परवाह किए बिना, उन्होंने जो भी चुना उसे ले लिया। उन्होंने जो भी चुना, ले लिया। यह पिछले दृष्टिकोण का विचार होगा, मिश्रित विवाह दृष्टिकोण। इस दिव्य राजत्व दृष्टिकोण में *न्यूनतम या "का"* की समझ यह है कि यह एक व्याख्यात्मक है, यहां तक कि वे सभी जो उन्होंने चुना है। उन्होंने इस अर्थ में पत्नियाँ लीं - यहाँ तक कि उनकी पसंद की पत्नियाँ भी - उन्होंने जितनी चाहें उतनी पत्नियाँ लीं। यह आंशिक विचार नहीं है, बल्कि यह एक व्याख्यात्मक विचार है, "जितने लोगों ने चुना।"

अब, प्रासंगिक रूप से इसका कुछ आधार है क्योंकि आप उत्पत्ति 4:23 पर वापस जाते हैं, "लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा," बहुवचन। हम जानते हैं कि लेमेक की एक से अधिक पत्नियाँ थीं। इसके अलावा, आपके पास 6:1 में है, "ऐसा हुआ जब मनुष्य पृथ्वी पर बढ़ने लगे या असंख्य हो गए।" संभवतः यह बहुविवाह जनसंख्या के गुणन से जुड़ा था। वह थोड़ा अधिक दूर है. लेकिन फिर थोड़ा और आगे जाने पर, यदि यह स्पष्टीकरण है कि पाप क्या था, बहुविवाह, तो मुद्दा यह था, दिव्य राजा जितनी चाहें उतनी पत्नियाँ ले रहे थे। आपके पास पद 4 में इन शब्दों के उपयोग के लिए एक स्पष्टीकरण भी है, " *नेफालिम*, *गिबोरिम*, नाम के लोग, इन संघों की संतानें ये शक्तिशाली पुरुष थे।" वे इन राजाओं के घरानों के राजकुमार थे जिनके पास शक्ति थी और वे उसी के रूप में पहचाने जाते थे। *नेफालिम* शब्द जिसका अनुवाद "दिग्गज" है , अनुवाद करना बहुत कठिन शब्द है । व्युत्पत्ति विवादित है. यदि आप *ओल्ड टेस्टामेंट की थियोलॉजिकल वर्डबुक* में इस शब्द को देखते हैं - मुझे नहीं पता कि आप इन दो संस्करणों से परिचित हैं या नहीं - आरके हैरिसन और ब्रूस वाल्टके द्वारा संपादित, जो हिब्रू शब्दों को सूचीबद्ध करता है, और फिर अर्थ पर चर्चा करने वाले लेख देता है और उपयोग। अब, देखिए यह एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ को निर्धारित करने के मामले में बहुत ही मायावी है। शायद विशाल कद अर्थ के चक्र का हिस्सा है, लेकिन ऐसा लगता है कि सबसे मजबूत अर्थ यह है कि शायद यह एक योद्धा प्रकार के व्यक्ति का विचार है। इसे ख़त्म करना कठिन है. इसीलिए एनआईवी अनुवाद भी नहीं करता। ठीक है, यह इस दिव्य राजत्व की समझ का मूल विचार है कि उत्पत्ति 6:1-4 में क्या हो रहा था और पाप क्या था।

हिंसा कारक

तो अब पौराणिक दृष्टिकोण, मैं वास्तव में व्यवहार्य नहीं मानता, लेकिन अन्य तीन में से, आपको यह विचार है कि पाप है, स्वर्गदूतों और महिलाओं के बीच संभोग, या यह ईश्वरीय और अधर्मी लोगों के बीच एक मिश्रित विवाह है , या यह इन तथाकथित दैवीय राजाओं का बहुपत्नी संबंध है - इन शहर-राज्यों के ये नेता जो राजकुमारों के इस हिंसक योद्धा वर्ग को जन्म देते हैं जिन्होंने आसपास के लोगों को आतंकित कर दिया है। छंद 12 और 13 पढ़ें, "परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की, देखो वह भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना अपना चाल-चलन बिगाड़ लिया है। परमेश्वर ने नूह से कहा, 'मेरे सामने सभी प्राणियों का अंत आ गया है, क्योंकि पृथ्वी उनके द्वारा हिंसा से भर गई है।'" वहां आपके पास हिंसा का संदर्भ है: "पृथ्वी हिंसा से भर गई है।" वह हिंसा संभवतः इन *नेफालिम*, *गिबोरिम* नाम के लोगों से संबंधित थी । अब यह पाठ एक कठिन पाठ है. मेरा मानना है कि हठधर्मी होना बहुत कठिन है और यह कहना कि इन संभावित समझ में से केवल एक ही सही है। और मुझे लगता है कि मैंने आपको तीनों का एक बुनियादी विचार देने की कोशिश की है, और मैं एक या दूसरे पर ज़ोर नहीं डाल रहा हूँ। मेरा अपना झुकाव अंतिम, दिव्य राजत्व दृष्टिकोण की ओर है। जाहिर तौर पर पवित्रशास्त्र में ऐसे उदाहरण हैं जहां स्वर्गदूत इंसानों का रूप धारण करते हैं। यह सच है। लेकिन फिर यह कहना एक बड़ा अगला कदम है कि वे मानव महिलाओं के साथ यौन संबंधों में सक्षम या रुचि रखते थे। यदि ऐसा है तो यह पवित्रशास्त्र में इसका एकमात्र उदाहरण होगा। यह संभव है। मैं इसे खारिज नहीं करूंगा और कहूंगा कि यह संभव नहीं है।

5. बाढ़ की ऐतिहासिकता

ठीक है, चलिए बाढ़ के समय पर चलते हैं। मैं इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहने जा रहा हूं. वह संख्या 4 है। हमने पहले इस पर चर्चा की है, और मैंने इसका कई बार उल्लेख किया है, बाढ़ का समय स्थापित करने का एकमात्र तरीका वंशावली का उपयोग करना है। वास्तव में आपको वंशावली का उपयोग करना होगा, उत्पत्ति 5 का नहीं, बल्कि आपको उत्पत्ति 11 की वंशावली से शुरू करना होगा क्योंकि इसका कारण यह है कि आपको कालानुक्रमिक रूप से निश्चित बिंदुओं से वापस काम करना होगा जिसे आप वास्तव में साम्राज्य काल में शुरू करते हैं। इजराइल। आपको

पलायन के समय से और पलायन से लेकर कुलपतियों तक काम करना होगा, जो आप मोटे तौर पर कर सकते हैं। और फिर आप देखते हैं कि आपको अब्राम से उत्पत्ति 11 को वापस नूह के पास ले जाना होगा और उत्पत्ति 11 की वंशावली का उपयोग करना होगा और कहना होगा, यहाँ बाढ़ अमुक तारीख को आई थी। हमने पहले इस पर चर्चा की थी कि यह किया ही नहीं जा सकता। वास्तव में यदि आप उन आंकड़ों को जोड़ते हैं, तो आपके पास बाढ़ और इब्राहीम के बीच केवल 292 वर्ष हैं, और बहुत कुछ है जो घटित होना था, और इतना ऐतिहासिक डेटा है जिसके बारे में हम जानते हैं कि वह वहां फिट नहीं बैठता है, लेकिन हम हैं निष्कर्ष के साथ छोड़ दिया जाए तो इसमें अंतराल होना चाहिए, जो आम तौर पर बाइबिल की वंशावली की विशेषता है, इसलिए ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे आप उस तारीख को तय कर सकें।

ठीक है। 5. है, “बाढ़ की ऐतिहासिकता।” मैं यहां जिस बारे में बात करना चाहता हूं वह बाइबिल की बाढ़ कहानी की उत्पत्ति और चरित्र का संपूर्ण प्रश्न है। मुझे नहीं लगता कि हम इस पर सवाल उठा सकते हैं कि बाइबिल के वृत्तांत का उद्देश्य हमें किसी ऐसी चीज़ के बारे में बताना है जो वास्तव में घटित हुई थी: एक ऐतिहासिक घटना। पवित्रशास्त्र में अन्यत्र बाढ़ का उल्लेख किसी घटना के घटित होने के अर्थ में किया गया है। मत्ती 24:37 कहता है, “पर जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जलप्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते, ब्याह-शादियां करते थे, और जब तक जलप्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन्हें कुछ पता न चलता था, वैसे ही अब भी होगा। मनुष्य के पुत्र का आगमन होगा।” वह तुलना या सादृश्य निश्चित रूप से यह मानता है कि बाढ़ वास्तव में घटित हुई थी। इब्रानियों 11:7 में, आप पढ़ते हैं, "विश्वास ही से नूह ने, जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, उन वस्तुओं के विषय में परमेश्वर से चितौनी पाकर भय के साथ शासन किया, और अपने घराने के बचाव के लिये जहाज तैयार किया।" फिर 2 पतरस 2 में, आपने पढ़ा कि "परमेश्वर ने पुरानी दुनिया को नहीं छोड़ा, बल्कि आठवें व्यक्ति और धार्मिकता के उपदेशक नूह को बचाया, जो अधर्मियों की दुनिया में बाढ़ ला रहा था ।" 2 का अध्याय 3 पतरस, फिर से आपके पास एक संकेत है, "जिससे वह जगत जो उस समय जल से भर गया या, नाश हो गया।" तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि बाइबल इसे कुछ ऐसी चीज़ के रूप में प्रस्तुत करती है जो वास्तव में घटित हुई

थी।

बेबीलोनियाई बाढ़ की कहानियाँ इसकी ऐतिहासिकता के विरुद्ध, कई लोगों ने अन्य लोगों, विशेष रूप से बेबीलोनियों के बीच संबंधित कहानियों का उपयोग किया है, और बाइबिल की कहानी और अतिरिक्त-बाइबिल कहानियों के बीच समानता के कारण, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि बाइबिल की कहानी सिर्फ एक संशोधित है बेबीलोनियन कहानी का संस्करण. मुझे यकीन है कि आपको पृष्ठ 36 पर फाइनगन का इस आशय का कथन याद होगा। बेबीलोन की बाढ़ की कहानी पर चर्चा करने के बाद फाइनगन कहते हैं, "बेबीलोन की प्राचीन बाढ़ की कहानी ऐसी ही है, जो अपने बहुदेववादी तत्वों से शुद्ध हो गई थी, और इस्राएलियों के बीच बच गई थी। दोनों स्रोत अब उत्पत्ति 6:5 से 9:17 में एक ही मार्मिक कहानी में एक साथ बुने गए हैं। और वह बिल्कुल तथ्यात्मक रूप से कहते हैं, कि बाइबिल की कहानी बस बेबीलोन की कहानी का रूपांतरण है। ऐसा कहा जाता है कि बेबीलोन की कहानी एक विशेष रूप से गंभीर नदी बाढ़ से उत्पन्न हुई थी, जिसे अलंकृत किया गया था और उसी तरह से याद किया गया था जिस तरह से अब हम इसे पाते हैं। इसलिए यदि आप उस दृष्टिकोण को अपनाते हैं तो आप निश्चित रूप से बाइबिल की कहानी की ऐतिहासिकता को खतरे में डाल देंगे।

अब, आश्चर्यजनक बात यह है कि, जब आप बाइबिल और बेबीलोनियाई बाढ़ की कहानियों की तुलना करते हैं, तो आश्चर्यजनक बात यह है कि उनमें कई समानताएँ हैं। वास्तव में, आप कह सकते हैं कि दोनों कहानियों का ढांचा काफी हद तक एक जैसा है। अब मैंने इन आठ बिंदुओं के साथ इसे रेखांकित करने का प्रयास किया है। बाइबिल और बेबीलोनियन कहानी दोनों में, एक बड़ी बाढ़ आ रही है और लगभग सभी मानव जीवन ले रही है। तो पहला है, "एक भीषण बाढ़ लगभग सभी मानव जीवन ले लेती है।" दूसरे, जहाज़ के ज़रिए कुछ जानवरों के साथ-साथ कुछ लोगों को भी बचा लिया जाता है। आप इसे बाइबिल की कहानी में पाते हैं और आप इसे बेबीलोन की कहानी में भी पाते हैं। तीसरा, बाइबिल की कहानी और बेबीलोन की कहानी दोनों में लोगों को आने वाले खतरे के बारे में दैवीय रहस्योद्घाटन द्वारा पहले से ही अवगत करा दिया गया है। चौथा, दैवीय निर्देश एक जहाज़ या नाव बनाने का था। पाँचवें, इस सन्दूक या जहाज की दोनों कहानियों में कई

कहानियाँ थीं। छठा, बाढ़ के अंत में जहाज एक पहाड़ पर रुक गया। सातवीं बार, जहाज में मौजूद लोगों ने कई पक्षियों को छोड़ कर बाहर की स्थिति का पता लगाया। इसे निर्धारित करने का यह एक बहुत ही शानदार तरीका है, लेकिन यह दोनों खातों में किया जाता है। फिर आठवें, जहाज से छूटने के बाद लोगों ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया। इसलिए यदि आप उन तत्वों को लेते हैं, जो कहानी के प्राथमिक तत्व हैं, तो आप उन प्राथमिक तत्वों को दोनों खातों में पाते हैं। अब विविधताएं हैं. आपकी संरचना में समानता है, लेकिन विवरण में बहुत भिन्नता है। मैं इसे कुछ मिनटों में समझाऊंगा, लेकिन आपके पास न केवल विविधता और विवरण की समान संरचना है, बल्कि आपके पास मेसोपोटामिया बाढ़ की कहानियों के विभिन्न संस्करण भी हैं।

आपके पास एक सामरी संस्करण है, जिसमें नायक जो बाइबिल की कहानी में नूह के अनुरूप होगा, ज़िसुद्र नाम का एक व्यक्ति है । आपके पास गिलगमेश महाकाव्य है, जिसकी फाइनगन ने कुछ विस्तार से चर्चा की है, जिसमें नूह से मिलता-जुलता नायक उत्तानपिष्टिम है। और फिर एकेडियन बेबीलोनियन प्रकार की कहानी का एक और संस्करण है, जिसे अत्राहासिस महाकाव्य कहा जाता है जिसमें अत्राहासिस कहानी का नायक है। तो मेसोपोटामिया की बाढ़ की कहानी के कई संस्करण हैं। मूल रूप से, उन सभी की संरचना एक जैसी है, हालाँकि यह संरचना जिसे मैंने यहाँ दोहराया है वह मुख्य रूप से गिलगमेश महाकाव्य से ली गई है। हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि किसी प्रकार का संबंध होना चाहिए, यदि आपके पास उस प्रकार की संरचना है, जो बाइबिल और अतिरिक्त-बाइबिल सामग्री में इतनी करीब है, तो किसी प्रकार का संबंध होना चाहिए।

बाइबिल और बेबीलोनियन बाढ़ की कहानियों के बीच अंतर , हालांकि, उस प्रश्न को देखने से पहले, मैं आपको एक विचार देता हूं कि मैंने कैसे कहा कि आपके बीच एक ही संरचनात्मक संबंध है लेकिन विस्तार में अंतर है - एक विवरण का अभी उल्लेख किया गया था, गिलगमेश महाकाव्य में घन, जो बाइबिल की कहानी में नहीं है. लेकिन मैं आपको समानताओं और भिन्नताओं के कुछ उदाहरण देता हूँ। आइए उससे शुरू करें—सन्दूक से शुरू करें। समानता यह है कि दोनों कहानियों के नायक को एक महान जहाज बनाने के लिए कहा जाता है, जिसके माध्यम से उसे

बचाया जाएगा। दोनों खाते आकार और निर्माण का विवरण देते हैं, जिसमें इसे जलरोधी बनाने के लिए बिटुमिनस सामग्री का उपयोग भी शामिल है। दोनों उस बारे में बात करते हैं. लेकिन फिर, जहां तक मतभेदों का सवाल है, गिलगमेश महाकाव्य में, उत्तानपिश्तिम ने कहा कि उसने अपनी नाव को छह डेक प्रदान किए थे। और फिर उन्होंने फर्श की जगह को नौ खंडों में विभाजित कर दिया। इसमें दरवाज़ा और कम से कम एक खिड़की भी उपलब्ध कराई गई थी। अब यदि आप इसकी तुलना बाइबिल की कहानी से करें, तो नूह के जहाज़ में तीन मंजिलें थीं। आप देखते हैं कि उत्पत्ति 6:16 में, जहाँ आप पढ़ते हैं, "जब तू जहाज़ बनाए, तब एक हाथ ऊपर उसका काम पूरा करना, और जहाज़ के भीतर एक द्वार बनाना, और नीचे दूसरी और तीसरी मंजिल बनाना।" इसे बनाएं।" तो आपके पास एक में छह कहानियाँ हैं, और दूसरे में तीन कहानियाँ हैं।

यदि आप आयामों को देखें, तो उत्पत्ति 6:15 कहता है कि जहाज़ 300 हाथ लंबा, 50 हाथ चौड़ा, 30 हाथ ऊँचा था - 300 लंबा, 50 चौड़ा, 30 हाथ ऊँचा। वह उत्पत्ति 6:15 है। यदि क्यूबिट मध्य उंगली की नोक से कोहनी तक की दूरी से मेल खाती है, तो यह लगभग 18 इंच है, जो आम तौर पर गणना की जाती है, जहाज़ लगभग 450 फीट लंबा, 75 फीट चौड़ा, 45 फीट ऊंचा था। यह एक अच्छे आकार की नाव है, जो फुटबॉल के मैदान से भी लंबी है। 75 फीट चौड़ा, 45 फीट ऊंचा। 43,000 टन का विस्थापन. यह दिलचस्प है कि आधुनिक जहाज-निर्माण जहाज़ में पाई जाने वाली लंबाई, चौड़ाई और ऊंचाई के समान अनुपात का पालन करता है। लेकिन आप उन आयामों की तुलना गिलगमेश महाकाव्य में उत्तानपिश्तिम के जहाज से करते हैं। उनकी नाव बिल्कुल घन आकार की थी, जैसा कि यहां बताया गया है, एक तरफ की माप 120 हाथ थी। मेसोपोटामिया में आई बाढ़ के बारोसिस विवरण के अनुसार, उनका जहाज 3,000 फीट लंबा और 1200 फीट चौड़ा था। तो वहां आप इन खगोलीय प्रकार की संख्याओं में शामिल हो जाते हैं। लेकिन मेरा कहना यह है कि, आपमें अद्भुत समानता है, और यहां उसे यह नाव बनाने के लिए कहा गया है, लेकिन फिर उस समानता के आसपास मतभेद के बिंदु हैं। विस्तार में अनेक भेद हैं। आप यहां नीचे जाने वाले प्रत्येक बिंदु पर एक ही प्रकार की चीज़ पाएंगे। समानता की ओर इशारा करते हुए, लेकिन विस्तार से इसके कई पहलुओं में भिन्नता है।

मैं देख रहा हूं कि मैं समय के साथ समाप्त हो गया हूं। अगले घंटे की शुरुआत में मैं आपको

इसके कुछ और उदाहरण दूंगा, और फिर हम चर्चा करेंगे कि हम समानता के साथ क्या करें? हम समानता की व्याख्या कैसे करें?

क्रिस्टन बीबे द्वारा प्रतिलेखन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
द्वारा पुनः सुनाया गया